॥ श्री ॥

## ॥ महाबलपञ्चकम् ॥

महेन्द्रवज्रलाञ्छनश्रिया हनुर्विराजते
महेन्द्रचापरोचिषा तनुर्यावे प्रभासते।
महेन्द्रकेतुवत्समुच्छ्रितं च यस्य लाङ्गलं
तमञ्जनाप्रभञ्जनात्मजं भजे महाबलम् ॥१॥

ज्याची हनुवटी देवराज इंद्राने केलेल्या वज्राघाताने उमटलेल्या चिन्हाच्या शोभेने प्रकाशित होते. ज्याचे शरीर आकाशात उड्डाण करताना-अंगकांति, रत्नालंकार, दिव्यवस्त्रे या सर्वांच्या एकत्रित रंगसंगतीतून इंद्रधनुष्याच्या प्रभे प्रमाणे भासते. ज्याचे पुच्छ इंद्रध्वजाप्रमाणे उंच उभारलेले आहे. त्या माता अंजना आणि वायुदेव यांच्या पुत्राला महाबली हनुमंताला मी भजतो.

प्रभाकरं ग्रसन्नमोजसा सुरैः प्रसादितं
प्रभाकरप्रपन्नविद्यया धिया विभूषितम्।
प्रभाकरान्वयाम्बरप्रदीपराघवं प्रियं

आपल्या तेज ओजाने जो बालपणीच सूर्याला गिळायला प्रवृत्त झाला, ज्याला देवांनी अनेक वर देऊन संतुष्ट केले. सूर्यदेवाने दिलेल्या विद्येने आणि अलौकिक बुद्धिमत्तेने जो विभूषित झाला. जो सूर्यवंशरूपी आकाशातील सूर्य अशा श्रीरामांना अतिशय प्रिय आहे त्या माता अंजना आणि वायुदेव यांच्या पुत्राला महाबली हनुमंताला मी भजतो.

JANUARY '15

| M | T | W | T | F | S | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

DECEMBER

©www.madhaveeraghuveer.com

करात्तकन्दुकत्वशैलकूटमूर्ध्वरेतसं
कराग्रघातपोथिताभिरालकादिराक्षसम् ।
करालदंष्ट्रक करालकालदंष्ट्रमोक्षणम्

ज्याने आपल्या हाती, एखाद्या चेंडूप्रमाणे द्रोणाचल धारण केला. जो आजन्म ब्रह्मचारी आहे. ज्याने केवळ हाताच्या चापटीनेच दैवांतकासारख्या पराक्रमी राक्षससेनापतींना ठेचून काढले. ज्याच्या मुखातील दाढा महाभयानक आहेत पण तो स्वतः विक्राळ काळाच्या दाढांमधून भक्तांना, सज्जनांना सोडवणारा आहे. अशा त्या माता अंजना आणि वायुदेव यांच्या पुत्राला महाबली हनुमंताला मी भजतो.

प्लवेन यस्य गोष्पदीकृतोऽप्रतीरसागरः
प्लवङ्गमर्क्षपक्षलक्षवाहिनी धुरन्धरः ।
प्लवो महान् शुभार्णवे भवद्भवेवितोपि वस्

मनोजवं मनोभवप्रभावमुक्तमानसं
मनोहरामजानकीकथानुगानकालसम् ।
मनोरथान् नमस्कृतां प्रपूरयन्नमञ्जसा

महाबलस्य मारुतेः स्तवो विमोहमोचनः
महाभयार्तिभञ्जनश्च रामभक्तिवर्धनः ।
महार्थ्य* प्रदोऽस्तु शुद्धचेतसा समीरितः ।
महोत्सवे जनैर्हनूमतः प्रसादनः कृतः ॥६॥

इति प्रणवप्रणीतं महाबलपञ्चकं संपूर्णम् ।
प्रणव प्रदीप गोरवले—

JANUARY '15

| M | T | W | T | F | S | S |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

© www.madhaveeraghuveer.com